विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वितीय: पाठनाम स्वर्णकाक:

ता: 27-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- इत्युक्त्वा काक: कक्षाभ्यन्तरातिस्रो मञ्जूषा निस्सार्य तां प्रत्यवदत् – बालिके !यथेच्छं गृहाण मञ्जूषामेकाम् ।लघुतमां मञ्जूषां प्रगृह्य बालिकया कथितमियदेव मदीयतण्डुलानां मूल्यं ।
  गृहमागत्य तया मञ्जूषा समुद्घाटिता ,तस्यां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता तद्दिनाद्धनिका च सञ्जाता ।
- शब्दार्थ
  इत्युक्त्वा –ऐसा कहकर ,कक्षाभ्यन्तरात् –कमरे के अन्दर से
  मञ्जूषा: -बक्से ,निस्सार्य -निकालकर ,प्रत्यवदत् -बोला ,यथेच्छम् – इच्छापूर्वक ,लघुतमाम् -सबसे छोटे
- सरलार्थ
  ऐसा कहकर कौए ने कमरे के अंदर से तीन बक्से से निकाल कर उससे कहा- हे कन्या! अपनी इच्छा से एक बक्सा ले लो ।सबसे छोटा बक्सा लेकर लड़की ने कहा -यही मेरे चावलों की कीमत है घर आकर उसने बक्सा , खोला तो उसमें बहुत कीमती(मूल्यवान) हीरों को देखकर वह बहुत खुश हुई और उसी दिन से वह धनी हो गई।